निश्चय करके चलें।

मुंशी प्रेमचन्द ने अपने उपन्यासों के द्वारा उपन्यास साहित्य के विकास का जो दूसरा चरण प्रस्तुत किया, उससे प्रभावित होकर अनेक नये उपन्यासकार उपन्यास क्षेत्र में आगे आये। जयशंकर प्रसाद, आचार्य शिव पूजन सहाय, पांडेय बेचन शर्मा उग्र, राजा राधिकारमण प्रसाद सिंह इत्यादि विद्वानों को हम प्रेमचन्द की परम्परा को आगे बढ़ाने का श्रेय दे सकते हैं।

डॉ० देव चरण प्रसाद 05/09/20
एसो० प्रो० हिन्दी
रा० उ० सं० महावि० सुखसेना, पूर्णियाँ

शास्त्री द्वितीय खण्ड, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ० द्वि० - पत्र

निबंध माला

शीर्षक - महा-मानव - सागर-तीरे,

लेखक - डॉ० रमाकान्त पाठक

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर -

प्रश्न :- 'महा-मानव-सागर-तीरे' किस प्रकार का निबंध है?

उत्तर निबंधकार डॉ० रमाकान्त पाठक द्वारा लिखित निबन्ध 'महा-मानव-सागर-तीरे' एक विचारात्मक निबंध है। इस लेख में विद्वान निबंधकार के सम्पूर्ण भारत के प्रसंग में बंगाल की महिमा का गौरवपूर्ण मूल्यांकन किया गया है।

प्रश्न :- लेखक बंगाल को देश का एक छोटा प्रतिरूप क्यों मानता है?

उत्तर :- निबंधकार का कहना है कि बंगाल यद्यपि भारत का एक प्रान्त है, तथापि इसे देश का एक छोटा प्रतिरूप कहा जा सकता है। आदिकाल से ही हमारे प्राचीन ग्रंथों में इसकी महिमा का उल्लेख है। इसके पावन तीर्थ गंगा-सागर को देखकर ही जहाँ व्यास जी ने गीता को 'स्थित-प्रज्ञता' की कल्पना की होगी। महासागर एवं हिमालय की उतुंग चोटियों को देखकर ही महर्षि वाल्मीकि ने भगवान राम का स्वरूप निर्धारित किया होगा। हिन्दुस्तान को छोटे रूप में देखना हो तो एक बार अवश्य बंगाल की राजधानी में प्रवेश करना चाहिए। बंग सागर में मिलने के लिए ही गंगा हिमालय से निकल धरती पर आयी है। ऐसे ही तथ्यों के आधार पर लेखक बंगाल को देश का एक छोटा प्रतिरूप मानता है।

प्रश्न :- बंगाल सदैव से ही राष्ट्र का गौरव रहा है कैसे?

उत्तर :- बंगाल सदैव से ही भारतीय मेधा, हिन्दुस्तानी संस्कृति, राष्ट्र के गौरव और तेज बल का प्रतीक रहा है। इसके विवेक एवं दूरदृष्टि का कोई जोड़ नहीं है। किसी जमाने में हमारे पूर्वजों ने भारतीयों को समुद्र पार किया तो सेतु बंध जैसे महातीर्थ की स्थापना कर लंका में विजय पताका फहराई गयी थी। बंगाल की भूमि रवीन्द्र-नाथ टैगोर, सुभाष चन्द्र बोस, ईश्वरचन्द्र विद्यासागर —

शेष आगे -

रामकृष्ण परमहंस और विवेकानन्द जैसे सपूतों की मातृभूमि है। यह वैसे लोगों की धरती है जहाँ के महामानव प्रताड़ना की अग्नि पीकर अंग्रेजों के अत्याचार का कालकूट पान कर साक्षात शंकर बन गए हैं। इन्हीं सब तथ्यों के आधार पर लेखक बंगाल को राष्ट्र का गौरव मानता है।

डॉ० देवचरण प्रसाद
04/09/20
एसो० प्रो० हिन्दी
रा० उ० सं० महा० वि० सुरकलेना, पूर्णियाँ

2020 वर्षीय परीक्षार्थियों के लिए
पुस्तक का नाम – दिगंत- भाग-2 पद्य भाग
उपशास्त्री, राष्ट्रभाषा हिन्दी
अ० हि० – पत्र

शीर्षक – जन- जन का चेहरा एक
कवि – गजानन माधव मुक्तिबोध

प्रश्न :- "जन-जन का चेहरा एक" शीर्षक कविता का सारांश अपने शब्दों में लिखें।

उत्तर :- 'जन-जन का चेहरा एक' शीर्षक कविता में यशस्वी कवि मुक्तिबोध ने अत्यन्त सशक्त एवं रोचक ढंग से विश्व की विभिन्न जातियों एवं संस्कृतियों के बीच एकरूपता दर्शाते हुए मनोवैज्ञानिक वर्णन किया है। कवि के अनुसार संसार के प्रत्येक महादेश, प्रदेश तथा नगर के लोगों में एक समान प्रकृति पायी जाती है।

विद्वान कवि की दृष्टि में प्रकृति समान रूप से अपनी ऊर्जा, प्रकाश एवं अन्य सुविधाएँ समस्त प्राणियों को वे चाहे जहाँ निवास करते हों, उनकी भाषा एवं संस्कृति जो भी हो बिना भेद-भाव किए प्रदान कर रही है। कवि की संवेदना प्रस्तुत कविता में मुखरित हुई है।

ऐसा प्रतीत होता है कि कवि शोषण तथा उत्पीड़न की शिकार जनता द्वारा अधिकारों के संघर्ष का वर्णन कर रहा है। वह समस्त संसार में रहने वाली जनता के शोषण के खिलाफ संघर्ष को रेखांकित करता है। इसलिए कवि उनके चेहरे की झुर्रियों को एक समान पाता है।

नदियों की तीव्र धारा में जन-जन की जीवन धारा का बहाव कवि के अन्तर्मन की वेदना के रूप में प्रकट हुआ है

जनता अनेक प्रकार के अत्याचार तथा अन्याय से प्रताड़ित हो रही है। मानवता के शत्रु जनशोषक दुर्जन लोग काली-काली छाया के समान अपना

शेष आगे –

प्रसार कर रहे हैं, अपने अत्याचारों का किला खड़ा कर रहे हैं।

सम्पूर्ण विश्व में ज्ञान एवं चेतना की ज्योति में एकरूपता है। संसार का कण-कण उसके तीव्र प्रकाश से प्रकाशित है। उसके अन्दर से प्रस्फुटित क्रान्ति की ज्वाला एक जैसा है। सत्य का उज्ज्वल प्रकाश जन-जन के हृदय में व्याप्त है।

प्रकाश की शुभ्र ज्योति का रूप एक है। वह सभी स्थान पर एक समान अपनी रोशनी बिखेरता है। क्रान्ति से उत्पन्न ऊर्जा एवं शक्ति भी सर्वत्र एक समान परिलक्षित होती है। इसीलिए समस्त जनता का चेहरा एक है।

सम्पूर्ण विश्व में दानव एवं दुरात्मा एकजुट हो गये हैं। दोनों की कार्यशैली एक है। इनके विरुद्ध छेड़े गये युद्ध की शैली भी एक है।

सारांश यह है कि संसार में अनेकों प्रकार के अत्याचार, शोषण तथा दमन समान रूप से अनवरत जारी है। उसी प्रकार जनहित के अच्छे कार्य भी समान रूप से हो रहे हैं। सभी की आत्मा एक है।

डॉ० देव चरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी
रा० उ० सं० महावि० सुखसेना, पूर्णियाँ
05/03/20

शास्त्री प्रथम खण्ड, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अं०द्वि०-पत्र
'निर्मला' उपन्यास
मुंशी प्रेमचन्द

प्रश्नः- हिन्दी उपन्यास के दूसरे चरण का वर्णन करें।

उत्तरः- हिन्दी-उपन्यास साहित्य के विकास में द्वितीय चरण का आरम्भ उपन्यास क्षेत्र में प्रेमचन्द के आगमन से माना जाता है। यद्यपि प्रेमचन्द के पूर्व से ही हिन्दी उपन्यासों में कथावस्तु, कथा-कथन, शैली और उद्देश्य आदि की दृष्टि से अन्तर आने लगा, लेकिन यह अन्तर इतना स्पष्ट नहीं हो पाता था कि स्पष्ट रूप से इसे विकास के दूसरे चरण का द्योतक मान लिया जाय। प्रेमचन्द के उपन्यास क्षेत्र में आगमन से यह अन्तर बिल्कुल स्पष्ट हो गया। यही कारण है कि प्रेमचन्द से ही हिन्दी-उपन्यास साहित्य के विकास का दूसरा चरण माना जाता है। सेवा-सदन को उदाहरण के रूप में देख सकते हैं। 'सेवा-सदन' हिन्दी का पहला उपन्यास है, जिसमें सामाजिक संघर्ष को अपने यथार्थ रूप में कथावस्तु का आधार बनाया गया है। इसे हम हिन्दी-उपन्यास साहित्य के विकास का मूल स्तम्भ कह सकते हैं।

मुंशी प्रेमचन्द ने एक नई राष्ट्रीय चेतना लेकर उपन्यास लिखना आरम्भ किया था। भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन और राष्ट्रीय चेतना ने एक संगठित शक्ति का रूप ग्रहण कर लिया था। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र काल में जो राष्ट्रीय जागरण केवल सांस्कृतिक सुधार तथा भारतीय गौरव के पुनरुत्थान के रूप में प्रारम्भ हुआ था, वह स्वराज्य स्थापना का रूप ग्रहण कर चला था। परिणामतः साहित्य में भी हमें परिवर्तन दृष्टिगोचर होता है। प्रेमचन्द ने अपने उपन्यासों में निम्न वर्ग, मध्यम वर्ग, किसान वर्ग और मजदूर वर्ग के जीवन की आर्थिक, राजनीतिक एवं सामाजिक समस्याओं के साथ-साथ उनके सम्बन्धों से उत्पन्न पारिवारिक एवं व्यक्तिगत जीवन की समस्याओं का चित्रण किया है। हमारे समाज का पूरा जीवन उनके उपन्यासों में चित्रित हुआ है। उनके प्रारम्भिक उपन्यासों में आदर्श की स्थापना का आग्रह है, ऐसा आदर्श जिसे वे पहले से सोचकर और उसे अपनी कथा के विकास के द्वारा स्थापित करने का

शेष आगे-